डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा गीत–ग़ज़ल संध्या आयोजित

नई दिल्ली। 27 जून 2019;साहित्य अकादेमी द्वारा आज राजभाषा मंच कार्यक्रम के अंतर्गत 'गीत–ग़ज़ल संध्या' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गीतकार बी.एल. गौड़ एवं गज़लकार कमलेश भट्ट 'कमल' एवं विज्ञान व्रत ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का आरंभ कमलेश भट्ट 'कमल' की ग़ज़लों से हुआ। कुछ शेर पढ़ने के बाद उन्होंने अपनी चार ग़ज़ले प्रस्तुत कीं, जिनमें यह उद्‌गार उल्लेखनीय थे –

विरोध अपना जताने का तरीका पेड़ का भी है
जहाँ से शाख काटी थी वहीं से कोपलें निकली'।।

लगे ही झूठ का इल्ज़ाम क्यों उस पर
सियासत क्या कभी सच बोलती भी है।

सारे दावे सबके फतवे अक्सर झूठे निकले हैं
यह दुनिया जानी है जितनी उतनी ही अनजानी है।

इसके बाद विज्ञान व्रत ने अपनी ग़जले प्रस्तुत कीं। उनकी ग़ज़लों के कुछ महत्त्वपूर्ण शेर थे –

खामुशी मेरी ज़बाँ है
वो मगर सुनता कहाँ है

वो मेरा चेहरा न हुआ
मैं भी शर्मिंदा न हुआ

वो हमसे अनजान रहे
हम जिनकी पहचान रहे

दुनिया तब तक दाना थी
जब तक हम नादान रहे

जुगनू ही दीवाने निकले
अंधियारा झुठलाने निकले

सबसे अंत में वरिष्ठ गीतकार बी.एल गौड़ ने अपने गीत प्रस्तुत किए। सस्वर प्रस्तुत किए गए इन गीतों को श्रोताओं ने बेहद पसंद किया। कुछ गीतों की महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ थीं –

जी हाँ मैं घर बनाता हूँ
काठ, कंकड से खड़ा कर
द्वार पर पहरा बिठाता हूँ
जी हाँ मैं घर बनाता हूँ

घर बनता है
घर के भीतर की आवाजों से।।

ऐ हिमखंड गलो मत ऐसे
जैसे मेरी उमर गली
मै रोया तो व्यर्थ गया सब
तुमको फिर भी नदी मिली।।

कार्यक्रम का संचालन संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध गीतकार एवं ग़ज़लकार सुरेश ऋतुपर्ण, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, प्रताप सिंह, अलका सक्सेना, भारतेंदु मिश्र, सुजाता शिवेन, अशोक कुमार ज्योति, अशोक मिश्र के अतिरिक्त अन्य कई महत्त्वपूर्ण लेखक एवं पत्रकार उपस्थित थे।

के. श्रीनिवासराव

साहित्य
राजभाषा मंच

साहित्य
राजभाषा मंच